Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 11 ~ Issue 1 (2023) pp: 582-585
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

सार्क और भारत: बदलती परिस्थितियां बदलते आयाम

सुनीता चौहान
असिस्टेंट प्रोफेसर
राजनीति शास्त्र विभाग
राजकीय महाविद्यालय पाबौ
पौड़ी गढ़वाल

सारांश: अपने क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास एवं सहयोग को बढ़ावा देने के लिए दक्षिण एशिया के राष्ट्रों ने खुद को संगठित करते हुए 1985 में सार्क की स्थापना की। इस शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य भारत का सार्क के प्रति उदासीन होता व्यवहार और सार्क के अन्य सदस्य राष्ट्रों की बिगड़ती आर्थिक परिस्थितियों का विश्लेषण करना, साथ ही अन्य आर्थिक संगठनों की तरफ भारत के बढ़ते कदमों एवं भारत के लिए उनकी आवश्यकताओं पर प्रकाश डालना है। उत्तर दक्षिण संवाद के असफल होने से अविकसित राष्ट्रों ने दक्षिण दक्षिण संवाद पर बल दिया जिसने अंतरराष्ट्रीय राजनीति में क्षेत्रीय संगठनों के महत्व को बढ़ा दिया।

मूल शब्द: आर्थिक सहयोग, वैश्वीकरण, क्षेत्रीय संगठन, दक्षिण एशियाई सहयोग संगठन।

Received 15 Jan., 2023; Revised 29 Jan., 2023; Accepted 31 Jan., 2023 © The author(s) 2023. Published with open access at www.questjournals.org

प्रस्तावना : दक्षिण एशिया विश्व का एक ऐसा क्षेत्र है जो प्राकृतिक एवं मानवीय क्षमताओं व संसाधनों से भरपूर है। पारस्परिक निर्भरता के सिद्धांत को स्वीकार करते हुए 8 दिसंबर 1985 को बांग्लादेश, भूटान, मालदीव, पाकिस्तान, नेपाल, श्रीलंका और भारत ने आपसी आर्थिक सहयोग को बढ़ाने के लिए दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन सार्क की स्थापना की। 2007 में अफगानिस्तान भी इसका 8 वां सदस्य बन गया। इसका मुख्यालय नेपाल की राजधानी काठमांडू को बनाया गया है। सार्क राष्ट्र वैश्विक क्षेत्रफल का 3.4% और दुनिया की आबादी का 24% हिस्सा है।

वैश्वीकरण की तीव्र होती प्रक्रिया ने राष्ट्रों में अंतर निर्भरता को बढ़ाया इसके कारण राष्ट्र ना केवल सामाजिक, आर्थिक परंतु सांस्कृतिक एवं सामाजिक विकास के लिए भी एक दूसरे पर निर्भर होने लगे। विकसित देशों द्वारा जब अविकसित राष्ट्रों के विकास प्रक्रिया में सहयोग करने से इंकार कर दिया गया तो क्षुब्ध होकर अविकसित राष्ट्रों ने स्वयं एक दूसरे का सहयोग कर अपने विकास रथ को आगे बढ़ाने पर बल दिया और एक क्षेत्र के राष्ट्रों ने मिलकर खुद को एक संगठन के रूप में संगठित कर लिया परिणाम स्वरूप क्षेत्रीय संगठन अस्तित्व में आए। इसी क्रम में दक्षिण एशिया के राष्ट्रों ने भी अपने मध्य सहयोग को स्थापित करने के लिए सार्क का निर्माण किया। सार्क की स्थापना ने यह आशा जगाई कि यह राष्ट्र अपने राजनीतिक मतभेदों को परे रखते हुए एक ऐसी क्षेत्र व्यवस्था को कायम करेंगे जो इन राष्ट्रों में फैली बेरोजगारी, गरीबी और भुखमरी जैसी समस्याओं को दूर कर सके। कर मुक्त व्यापार को स्थापित करना इसका प्रमुख उद्देश्य रखा गया ताकि इन राष्ट्रों के उत्पाद आसानी से एक दूसरे को प्राप्त हो सके और इनका आपसी व्यापार इस स्तर तक बढ़ जाए कि यह राष्ट्र अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ साथ आपसी सहयोग से अपनी अर्थव्यवस्थाओं को भी स्वावलंबी बना सके। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए इन राष्ट्रों ने दक्षिण एशियाई वरीयता व्यापार समझौता (साप्टा) को 1995 में लागू किया। साप्टा का उद्देश्य दक्षिण एशिया में व्यापार संबंधी बाधाओं को दूर करना था। दूसरा महत्वपूर्ण उद्देश्य सार्क राष्ट्रों के मध्य व्यापार की एक ऐसी व्यवस्था को कायम करना है जो अपेक्षाकृत अधिक उदार हो। 2004 में सार्क राष्ट्रों ने मुक्त व्यापार क्षेत्र संधि(साफ्टा) लागू की जिसके अंतर्गत इन देशों ने अपनी व्यापारिक सीमाओं को एक दूसरे के लिए खोल दिया। दक्षिण एशिया के यह राष्ट्र अपनी विशाल जनसंख्या और प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता के कारण हमेशा से ही विश्व के आकर्षण का केंद्र रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक राष्ट्र इसे एक बहुत बड़े बाजार के रूप में देखते आए हैं।

सार्क की असफलता के कारण:

सार्क एक मजबूत क्षेत्रीय संगठन बनने में असफल रहा है। वह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वह स्थान हासिल नहीं कर पाया जो आसियान व यूरोपीय संघ जैसे क्षेत्रीय संगठनों को प्राप्त है। सार्क की असफलता के पीछे कुछ कारण रहे हैं जो निम्न प्रकार से है:

1. सार्क की कमजोरी का सबसे बड़ा कारण यह है कि इसके सदस्य राष्ट्र अपने मध्य राजनीतिक तनावों को भुला नहीं पाए हैं या यूं कहें कि सुलझा नहीं पाए हैं। कई राष्ट्रों ने तो सार्क को अपने राजनीतिक मुद्दों को उठाने वाले एक मंच के रूप में ही प्रयोग किया है। जिससे यह संगठन अपने मूल्य उद्देश्यों से हटता चला गया।
2. क्षेत्र में आतंकवाद और चरमपंथियों का बोलबाला रहा है पाकिस्तान जैसे राष्ट्रों ने अपने प्रभाव को कायम करने के लिए हमेशा से इनका साधन के रूप में प्रयोग किया है। यदि सहयोगी राष्ट्र एक दूसरे की आंतरिक व्यवस्था को ध्वस्त करने में लग जाए तो सहयोग की कल्पना करना बेमानी होगा।

इसी प्रकार रोहिंग्या मुसलमानों को लेकर भी इन राष्ट्रों के मध्य तनाव देखा जा सकता है, शरणार्थियों की समस्या भी इनके संबंधों में खटास को उत्पन्न करती है।

3. भारत सार्क के राष्ट्रों में सबसे अधिक जनसंख्या एवं बड़ी अर्थव्यवस्था वाला राष्ट्र है अतः उसका सार्क के प्रति उत्तरदायित्व भी अधिक हो जाता है। यद्यपि भारत ने समय-समय पर सभी सार्क राष्ट्रों के मध्य सहयोग को स्थापित करने हेतु कदम उठाए हैं परंतु वह पर्याप्त नहीं है। बड़ा राष्ट्र होने के बावजूद भारत सार्क के राष्ट्रों का वह विश्वास हासिल करने में असफल रहा है जो इन राष्ट्रों को आर्थिक एकीकरण की ओर ले जा सकते थे। सार्क के अन्य राष्ट्र भी भारत को एक ऐसे बड़े भाई के रूप में देख कर रहे हैं जो उन पर अपने प्रभाव को स्थापित करने और उनके बाजार पर आधिपत्य को स्थापित करने में लगा हुआ है। भारत के प्रति सार्क सदस्यों का यह अविश्वास इन राष्ट्रों की अर्थव्यवस्था के लिए वर्तमान समय में बड़ा घातक सिद्ध हुआ है।
4. एक दूसरे के प्रति अविश्वास ने हीं इस क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय कारकों के हस्तक्षेप को प्रोत्साहन दिया है। भारत पर अविश्वास के कारण यह राष्ट्र चीन की तरफ आकर्षित होते चले गए और चीन भारत के विरुद्ध इन राष्ट्रों का प्रयोग बड़ी कुशलता से करता गया। भारत ने भी दक्षिण एशिया में चीन के बढ़ते विस्तार को रोकने के लिए समय रहते ठोस कदम नहीं उठाए।
5. चीन की विस्तारवादी नीति और भारत पर अविश्वास के कारण आज श्रीलंका और पाकिस्तान चीन के हाथों की कठपुतली बन चुके हैं। अधिक से अधिक वित्तीय लाभ और तीव्र विकास को प्राप्त करने की चाह के कारण चीन ने इनकी अर्थव्यवस्थाओं को ही निगल लिया है, अब यह राष्ट्र लाख चाहे तो भी चीन के रचे इस आर्थिक चक्रव्यू से निकलने में असमर्थ है। अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, नेपाल, मालदीव छोटे राष्ट्र हैं जो अपनी आर्थिक विकास के लिए आज भी अन्य राष्ट्रों पर ही निर्भर है। भारत को छोड़ सभी सदस्य राष्ट्रों की आर्थिक स्थिति इतनी मजबूत नहीं है कि वह सार्क को एक मजबूत संगठन बनाने पर ध्यान दें, अभी तो इन राष्ट्रों का विशेषकर श्रीलंका और पाकिस्तान का सारा ध्यान अपने आर्थिक तंगी, बदहाली और निरंतर बढ़ती महंगाई को काबू करना है।
6. राजनीतिक अस्थिरता भी सार्क की कमजोरी का कारण रही है हाल ही में अपनी टूटती अर्थव्यवस्थाओं के कारण श्रीलंका और पाकिस्तान राजनीतिक अस्थिरता के केंद्र रहे और एक के बाद एक सत्ताधारी निरंतर बदलते गए, वहीं अफगानिस्तान आज भी तालिबान के साए में जीने को मजबूर हैं, तो नेपाल भी चीन के साथ अपने रिश्तो को बढ़ाने में लगा हुआ है। वहां के राजनीतिक दल भी आर्थिक विकास के मुद्दों पर सहमत नहीं है। राजनीतिक अनिश्चितता सार्क के अधिकतर राष्ट्रों में बनी रहती है, जो सार्क को एक निश्चित दिशा देने में और अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायक नहीं है।
7. पाकिस्तान और श्रीलंका में गहराते आर्थिक संकट ने क्षेत्र के विकास में और भी रुकावटें पैदा कर दी हैं। आज श्रीलंका 3 बिलियन डॉलर का आयात कर रहा है जो उसके निर्यात से कहीं अधिक है। विदेशी मुद्रा भंडार जो 2019 के अंत तक 7.6 बिलियन डॉलर था, मार्च 2020 तक घटकर 1.93 बिलियन डॉलर हो गया ओर वर्तमान में यह केवल 50 मिलियन डॉलर ही शेष है। श्रीलंका सरकार का विदेशी कर्ज भी 51 बिलियन डॉलर है जिसमें 6.5 बिलियन डॉलर कर्ज़ उसने चीन से लिया है। पाकिस्तान के आयात और निर्यात में भी 40 अरब डॉलर का अंतर है। पाकिस्तान का विदेशी मुद्रा भंडार इस समय केवल 4.3 अरब डॉलर है जो साल 2014 के बाद सबसे कम स्तर पर है।
उपरोक्त मुख्य कारण हैं जो सार्क के राष्ट्रों के मध्य आर्थिक समानता और सहयोग को स्थापित करने में बाधा उत्पन्न कर रहे हैं। भारत समय-समय पर इन राष्ट्रों को आर्थिक एवं वित्तीय मदद देता आया है, लेकिन फिर भी सार्क के इन राष्ट्रों का रुख भारत के प्रति सदैव नकारात्मक ही रहा है जिसकी वजह से भारत ने भी सार्क पर ध्यान केंद्रित ना करते हुए अन्य राष्ट्रों के साथ अपने आर्थिक संबंधों को मजबूत बनाने पर बल दिया है।

भारत और सार्क:

भारत जनसंख्या,अर्थव्यवस्था, अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव भौगोलिक विस्तार सभी दृष्टिकोण से सार्क का एक सशक्त राष्ट्र है। सार्क में क्षेत्रफल व जनसंख्या की दृष्टि से भारत की 70% की हिस्सेदारी है साथ ही सार्क की अर्थव्यवस्था में भी उसकी भागीदारी 70% से अधिक है। मजबूत अर्थव्यवस्था के कारण ही भारत समय-समय पर सार्क के अन्य राष्ट्रों की आर्थिक एवं वित्तीय मदद भी करता रहा है। यदि कोविड-19 के दौरान देखा जाए तो भारत ने कोविड टीके से लेकर हर संभव मदद सभी सार्क राष्ट्रों तक पहुंचाई और सभी सदस्य राष्ट्रों को सार्क के मंच पर पुनः एकत्रित करने का प्रयास किया, जिसने भारत को एक 'ग्लोबल लीडर' के रूप में स्थापित किया। आज भारत इन राष्ट्रों में चल रही कई विकास परियोजनाओं में अपना निवेश कर रहा है उदाहरण के लिए, अफगानिस्तान में आर्थिक गलियारे, नेपाल में जल विद्युत एवं अन्य ऊर्जा परियोजनाओं में, बांग्लादेश के साथ आर्थिक सहयोग, श्रीलंका के साथ पर्यटन शिक्षा आदि क्षेत्रों में भारत निरंतर सहयोग करता आ रहा है। भारत का हमेशा से यह प्रयास रहा कि वह दक्षिण एशिया क्षेत्र में आर्थिक सहयोग को बढ़ाने के लिए सार्क को मजबूती प्रदान करें। परंतु भारत के प्रयास विफल होते नजर आ रहे हैं।
सार्क के राष्ट्र भारत के पड़ोसी राष्ट्र भी हैं जो भारत से आर्थिक मदद तो प्राप्त करना चाहते हैं परंतु अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत का समर्थन करने से कतराते रहे हैं। पड़ोसी राष्ट्र होने के कारण यह भारत के साथ अपनी सीमाओं को भी बांटते हैं परिणामस्वरूप कई राजनीतिक और सीमा संबंधी विवाद भारत व इन राष्ट्रों के मध्य पाए जाते हैं। सीमा पार आतंकवाद भारत और सार्क के संबंधों को प्रभावित करते रहे हैं। भारत ने आर्थिक सहयोग को स्थापित करने के लिए आतंकवाद के विरुध सार्क को एकजुट होने का आग्रह किया परंतु पाकिस्तान ने सदैव आतंकवाद का समर्थन करने और भारत के आंतरिक मामलों को उठाने के लिए सार्क का प्रयोग अंतरराष्ट्रीय मंच के रूप में किया है। जिसने कुछ समय के लिए भारत को सार्क के प्रति निष्क्रिय सा बना दिया था। परंतु कोविड-19 यह सिद्ध कर दिया कि भारत आज भी सार्क को दक्षिण एशिया के विकास में एक महत्वपूर्ण और मजबूत संगठन बनाने के लिए प्रयासरत है।
भारत इस वैश्वीकरण के दौर में अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में एक प्रभावी भूमिका निभाना चाहता है इसलिए भारत स्वयं को केवल सार्क एवं उसकी समस्याओं तक सीमित नहीं रख सकता। आज भारत दक्षिण एशिया में चीन के बढ़ते प्रभाव को रोकने और अपनी शक्ति को बढ़ाने का इच्छुक है इसलिए आज वह अमेरिका,इजराइल, यूएई, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, दक्षिण अफ्रीका, यूरोपीय संघ एवं आसियान के राष्ट्रों के साथ अपने संबंधों को स्थापित करने पर बल दे रहा है।

भारत का अन्य संगठनों के साथ संबंध:

भारत आज अपनी सामरिक एवं आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अन्य क्षेत्रीय, आर्थिक एवं सुरक्षा संगठनों के साथ गठबंधन कर रहा है। जिनमें से कुछ संगठन निम्न प्रकार से हैं:

शंघाई सहयोग संगठन और भारत:

वर्तमान में विश्व के 8 राष्ट्र शंघाई सहयोग संगठन के सदस्य हैं जिनमें कजाखस्तान, रूस, तंजानिया, चीन, किर्गिस्तान, उज़्बेकिस्तान, भारत और पाकिस्तान शामिल है। इस संगठन के उद्देश्यों में क्षेत्रीय सुरक्षा और आतंकवादी गतिविधियों से निपटना शामिल है। शंघाई सहयोग संगठन

*Corresponding Author: सुनीता चौहान

के माध्यम से भारत सेंट्रल एशिया के अन्य राष्ट्रों के साथ अपने संबंधों को स्थापित कर सकता है साथ ही वह चीन और पाकिस्तान के साथ अपनी क्षेत्रीय एवं सीमा विवादों को भी एस० सी० ओ० के मंच से हल करने का प्रयास कर सकता है। भारत और चीन के मध्य लद्दाख में उत्पन्न विवाद के समय भी भारत ने चीन के साथ बातचीत करने के लिए इस मंच का प्रयोग किया यद्यपि पाकिस्तान इस प्रकार की वार्ताओं से दूर ही रहता है। इस संगठन में भारत को सदस्यता प्रदान करने का मुख्य कारण इस क्षेत्र में चीन की बढ़ती हुई शक्ति को संतुलित करना था।

क्वाड और भारत: क्वाड के सदस्य राष्ट्रों में भारत, जापान, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया शामिल है। क्वाड का अर्थ है क्वाड्रीलेटरल सिक्योरिटी डायलॉग, 2017 से इस संगठन ने सक्रिय रूप से कार्य करना प्रारंभ किया है। इसका मुख्य उद्देश्य हिंद प्रशांत क्षेत्र में चीन की बढ़ती सैन्य गतिविधियों एवं घुसपैठ से समुद्री मार्गों को मुक्त रखना है। चीन के बढ़ते वर्चस्व को रोकने में आज अमेरिका भी भारत के साथ खड़ा नजर आ रहा है। चीन को हिंद प्रशांत क्षेत्र में चारों तरफ से घेरने की नीति इस संगठन का आधार है। हिंद प्रशांत क्षेत्र के सभी राष्ट्रों के साथ क्वाड के राष्ट्र सामान्य एवं एक जैसी समस्याओं के निपटारे में आपसी सहयोग के लिए तैयार हैं, जो चीन की परेशानी का सबसे बड़ा कारण है। क्वाड के कारण ही अभी हाल ही में चीन ताइवान पर आक्रमण करने की हिम्मत नहीं जुटा पाया।

आसियान और भारत: 1967 में स्थापित आसियान में इंडोनेशिया, मलेशिया फिलीपींस, सिंगापुर, थाईलैंड, ब्रूनेई, लाओस, कंबोडिया म्यानमार और वियतनाम राष्ट्र शामिल हैं। सामरिक दृष्टि से आसियान भारत के लिए महत्वपूर्ण है। आसियान भारत के आर्थिक हितों के साथ-साथ चीन के इस क्षेत्र में बढ़ते प्रभाव को रोकने में भी भारत की मदद कर सकता है। भारत का आसियान के साथ संबंध उसकी 'लुक ईस्ट पॉलिसी' का हिस्सा है। आसियान राष्ट्रों के साथ भारत अपने संबंधों को मजबूत करने और अपने व्यापारिक व सुरक्षा संपर्क को बढ़ाने के लिए भारत म्यांमार थाईलैंड राजमार्ग, कालादान मल्टीमॉडल ट्रांसपोर्ट आदि परियोजनाओं पर कार्य कर रहा है। भारत आसियान व्यापार अप्रैल 2021 से फरवरी 2022 तक 98.39 बिलियन अमेरिकी डॉलर था जिसे बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। भारत और आसियान दोनों ही चीन की विस्तार वादी नीतियों को रोकने में मिलकर अहम भूमिका निभा सकते हैं।

यूरोपीय संघ और भारत: यूरोपीय संघ अमेरिका के बाद भारत का दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। भारत और यूरोपीय संघ के मध्य व्यापारिक कारोबार 2021-2022 में 43.5% की वार्षिक वृद्धि के साथ 116.36 बिलियन अमेरिकी डॉलर का रहा। यूरोपीय संघ को भारत का निर्यात वित्त वर्ष में 2021-22 में 57% से बढ़कर 65 बिलियन डॉलर हो गया है। यूरोपिय संघ और भारत मुक्त व्यापार समझौते पर भी बातचीत के लिए अग्रसर हैं। जहां यूरोपीय संघ भारत की आर्थिक महत्वाकांक्षाओं और यूरोप तक उसके आर्थिक प्रसार में सहायक सिद्ध हो सकता है, वहीं भारत यूरोपीय संघ के राष्ट्र के लिए उपयुक्त और विशाल बाजार प्रस्तुत करता है। विकास की अपार संभावनाओं के कारण भारत यूरोपीय राष्ट्रों को अपने यहां निवेश के लिए आमंत्रित कर रहा है जिसमें काफी हद तक वह सफल भी रहा है।
उपरोक्त संगठनों के साथ भारत अपने संबंधों को निरंतर मजबूत करने पर बल देता रहा है क्योंकि यह संगठन भारत की सामरिक सुरक्षा, क्षेत्रीय सुरक्षा व आर्थिक सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। भारत के लिए सार्क उपरोक्त संगठनों की अपेक्षा कम महत्वपूर्ण प्रतीत होता है। सार्क के कई राष्ट्र वह आर्थिक सम्मान हासिल नहीं कर पाए हैं जो विश्व व्यवस्था पर अपनी छाप छोड़ सकें, कुछ राष्ट्रों की तो आर्थिक स्थिति इतनी दयनीय है कि भारत उनकी मदद एक सीमा तक ही कर सकता है।

सार्क को मजबूत संगठन बनाए जाने हेतु सुझाव: सार्क को एक मजबूत सैन्य संगठन बनाए जाने के लिए निम्न सुझाव दिए जा सकते हैं
1. सार्क के निर्माण का प्रमुख उद्देश्य आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देना था परंतु राजनीतिक मुद्दों को इसके कार्य क्षेत्र से दूर रखा गया। आज आवश्यकता इस बात की है कि इसे दक्षिण एशिया के राष्ट्रों के मध्य उत्पन्न राजनीतिक गतिरोधों को दूर करने वाला मंच भी बनाया जाना चाहिए, जहां यह राष्ट्र आपसी बातचीत के माध्यम से अपने राजनीतिक विवादों को हल कर सकें क्योंकि राजनीतिक मित्रता के बिना आर्थिक सहयोग की अपेक्षा नहीं की जा सकती।
2. सार्क के राष्ट्रों को अपने प्रतिरक्षा बजट व्यय में कमी लानी चाहिए ताकि छोटे व आर्थिक दृष्टि से दूसरे राष्ट्रों पर निर्भर देश आतंकित ना हों इसलिए क्षेत्र के विसैन्यीकरण पर भी बल दिया जाना चाहिए।
3. सार्क के राष्ट्रों को यह प्रयास करना चाहिए कि वह अपनी समस्त समस्याओं का निवारण आपसी बातचीत एवं सहयोग से करें। इन्हें आपस में इतना विश्वास पैदा करना होगा कि विश्व का अन्य कोई भी राष्ट्र इनके द्विपक्षीय मामलों में हस्तक्षेप ना कर सके और चीन जैसे राष्ट्रों की घुसपैठ को रोका जा सके।
4. यह सभी राष्ट्र प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर है अतः अपने इन संसाधनों का आपसी सहयोग से कैसे उत्तम प्रयोग किया जाए? इस पर इन राष्ट्रों को विचार-विमर्श कर आर्थिक मजबूती की ओर बढ़ना चाहिए।
निष्कर्ष: अतः कहा जा सकता है कि सार्क अन्य क्षेत्रीय संगठनों की अपेक्षा एक कमजोर संगठन है, परंतु उसकी महत्ता दक्षिण एशिया के संदर्भ में कम नहीं है। दक्षिण एशिया का अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रतिनिधित्व का सर्वोच्च साधन सार्क है। कोविड-19 के दौरान भारत की पहल पर सभी सदस्य राष्ट्र सार्क के मंच पर सहभागी के रूप में एकत्रित हुए अतः राष्ट्रों के आपसी संपर्क में सार्क ने एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। भले ही कुछ मुद्दों पर इसके सदस्य राष्ट्र एकमत ना हों फिर भी आपदा प्रबंधन, पर्यावरणीय मुद्दों, वीजा प्रावधानों, शैक्षिक व सांस्कृतिक लेन-देन में सार्क ने इन राज्यों के मध्य सहयोग उत्पन्न किया है। कुछ सदस्य राष्ट्रों को छोड़ दिया जाए तो बाकी सभी राष्ट्र सार्क का प्रयोग आपसी आर्थिक सहयोग को बढ़ाने वाले संगठन के रूप में करते रहे हैं। भारत और बांग्लादेश के मध्य बढ़ता व्यापार इसका उदाहरण है। यह एकमात्र ऐसा संगठन है जो दक्षिण एशिया के राष्ट्रों के मध्य प्रत्येक स्तर पर सहयोग को स्थापित करने की राह तैयार करता है। सार्क अंतरराष्ट्रीय शांति एवं व्यवस्था को बनाए रखने के संयुक्त राष्ट्र संघ के सिद्धांतों पर भी अपनी पूर्ण आस्था व्यक्त करता है। आज जरूरत है तो इसके सदस्य राष्ट्रों के व्यवहार में परिवर्तन की। सार्क तभी मजबूती से कार्य कर सकता है जब सभी सदस्य एक दूसरे के प्रति विश्वास को मजबूत करें और तेजी से विकसित होने वाली भारतीय अर्थव्यवस्था का लाभ उठा सकें। परंतु भारत के प्रत्येक स्तर पर सहयोग के लिए इन राष्ट्रों को भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की नीतियों का समर्थन करना होगा। सार्क के सदस्य राष्ट्रों को भारत को 'बिग ब्रदर' के रूप में ना देख कर एक ऐसे 'कॉमन फ्रेंड' के रुप में देखना होगा जिसका साथ सभी सार्क राष्ट्रों को आर्थिक और सैन्य दृष्टि से मजबूती प्रदान करेगा। आज अपनी सामरिक और आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के लिए सार्क के सदस्य राष्ट्र विश्व के अन्य राष्ट्रों तथा क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ अपने संबंध स्थापित कर रहे हैं लेकिन इसका दुष्प्रभाव सार्क राष्ट्रों के आपसी संबंधों पर नहीं पड़ना चाहिए। सार्क केवल सदस्य राष्ट्रों के

*Corresponding Author: सुनीता चौहान

मिलन का एक मंच बनकर नहीं रहना चाहिए बल्कि सार्क को ठोस एवं कारगर नीतियों का निर्माण कर अपने सदस्य राष्ट्रों के मध्य उत्पन्न सभी विवादों और समस्याओं को दूर करने वाला मजबूत क्षेत्रीय संगठन बनाया जाना चाहिए। भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने भी कहा था कि, "हमें सार्क की जोड़ने वाली बातों से प्रेरणा लेनी चाहिए ना कि ऐसी बातों से जो सार्क को तोड़ती हैं।"

संदर्भ:

1.किशोर सी.दास, "दि पालिटिकल इकानॉमी ऑफ रीजनल काॅपरेशन इन साउथ एशिया" पेसिफिक अफेयर्स, वॉल्यूम 69,नं02,समर् 1996
2.कुमार राजीव, सॉर्क: चेंजिंग रियेलिटीज़, ऑपर्च्युनिटीज एंड चैलैंजिस" डिस्कशन पेपर (11/2009)
3.वी.एन. खन्ना, "भारत की विदेश नीति " 5वां संस्करण, 2019
4.https://www.worlddata.info
5. https://www.bbc.com
6. http://pib.gov.in